SHIVAJI COLLEGE

095 094 090

'RESEARCH JOURNEY' *International E- Research Journal*
Impact Factor - (SJIF) – 6.625 (2019),
Special Issue -259 (B) 'वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएं, संस्कृति और साहित्य की पारस्परिकता'
Peer Reviewed Journal

E-ISSN : 2348-7143
Jan. 2021

Impact Factor – 6.625 E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January 2021

Special Issue 259 (B)

वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएं, संस्कृति और साहित्य की पारस्परिकता

Guest Editor -
Dr. Babasaheb M. Gore,
Principal,
Janvikas Mahavidyalaya Bansarola,
Tq.- Kaij, Dist.- Beed

Chief Editor : Dr. Dhanraj T. Dhangar

Executive Editors :
Prof. Dr. Murlidhar A. Lahade
Dr. Gopal S. Bhosale
Dr. Ramesh M. Shinde
Dr. Arvind A. Ghodke

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : www.researchjourney.net

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

*Cover Photo (Source) : Internet

© All rights reserved with the authors & publisher

Price : Rs. 1000/-

097 096 092

'RESEARCH JOURNEY' *International E- Research Journal*
Impact Factor - (SJIF) – 6.625 (2019),
Special Issue -259 (B) 'वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएं, संस्कृति और साहित्य की पारस्पारिकता'
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
Jan. 2021

मराठी दलित साहित्य का हिंदी साहित्य पर प्रभाव

डॉ. सुधीर गणेशराव [redacted]
सहयोगी प्राध्यापक
हिन्दी विभागाध्यक्ष
शिवाजी महाविद्यालय, हिंगोली. महाराष्ट्र
Email- wagh.sudhir001@gmail.com

शोध सार :

दलित साहित्य न केवल वर्ण व जाति–व्यवस्था से मुक्ति का साहित्य है, अपितु यह सामाजिक समानता, स्वतंत्रता, मानवीयता एवं विश्वबन्धुता को प्रतिप्रस्थापित करने का साहित्य है। इसलिए इसे परम्परागत साहित्यिक मानदण्डो पर नहीं कसा जा सकता। दलित साहित्य वर्ण, जाति व्यवस्था से मुक्ति, वैज्ञानिक सोच व संवेदनशील का साहित्यिक हस्तक्षेप है।

मुख्य शब्दः– वर्ण, जाति व्यवस्था अन्धविश्वासों, अन्याय एवं शोषन, मानवीयता एवं विश्वबन्धुता।

भारत वर्ष एक प्राचिनतम राष्ट्र है। इसमें समाज का विभाजन मूलतः जाति तथा वर्ण के आधार पर ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र इन चार वर्णों में किया गया है। दलित साहित्य वर्ण, जाति व्यवस्था से मुक्ति, वैज्ञानिक सोच व संवेदनशील का साहित्यिक हस्तक्षेप है, जो अन्धविश्वासों, अन्याय एवं शोषन के विरुध्द होकर मनुष्य को पूर्वाग्रहों से मुक्त करता है। वस्तुतः वह प्रतिशोध का साहित्य है। दलित साहित्य न केवल वर्ण व जाति–व्यवस्था से मुक्ति का साहित्य है, अपितु यह सामाजिक समानता, स्वतंत्रता, मानवीयता एवं विश्वबन्धुता को प्रतिप्रस्थापित करने का साहित्य है। इसलिए इसे परम्परागत साहित्यिक मानदण्डो पर नहीं कसा जा सकता।

आधुनिक काल में "दलित'' शब्द का विशेष अर्थ प्राप्त हो रहा है। दलित शब्द को लेकर हिंदी साहित्य के विद्वांनो में मतभेद है। गांधीजीने हरिजन, श्री भगाटे ने अपृश्य और डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरने बहिष्कृत अछूत शब्द का प्रयोग किया है । प्राचीन साहित्य में शुद्र, अपर्ण, अतिशुद्र, अपवित्र अत्यंत आदि शब्द का प्रयोग किया गया है। भारत में ६०–७० साल पुर्व से दलित शब्द का प्रयोग हो रहा है। दलित केवल हरिजन और नवबौध्द नहीं। गांव की सीमा के बाहर रहनेवाली सभी अछूत जातियाँ, आदिवासी, भूमिहिन, खेत मजदूर, श्रमिक, कष्टकरी जनता और यायावर जातियाँ सभी के सभी दलित शब्द से व्याख्यायित होती है। दलित शब्द की व्याख्या केवल अछूत जाति का उल्लेख करना पर्याप्त नहीं होगा, इसमें सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक दृष्टि से पिछडे हुए लोगों का भी समावेश हुआ है। "देश की निम्नतर जातियों में पीडित वर्ग की मानसिकता, निकाल बाहर करने के लिए उस जाति में परिवर्तन की आवश्यकता है।''[1]

मराठी की तुलना में हिंदी क्षेत्र में शिक्षा का प्रसार देर से होने तथा महात्मा ज्योतिबा फुले, सावित्रिबाई फुले और डॉ. भीमराव अंबेडकर जैसे समाज सुधारकों की कमी से हिंदी में दलित चेतना का साहित्य देर से आया। हिंदी क्षेत्र में अशिक्षा के कारण लोग भाग्यवाद और नियतिवाद के भरोसे रह गए, जिससे वह मराठी की तुलना में दलित चेतना में पिछड़ गया। भक्तिकाल में जो सामाजिक चेतना संत नामदेव, संत तुकाराम, मराठी संतो ने के यहां मिलती है, वह हिंदी क्षेत्र में संत कबीर, संत रैदास, संत दादू, गुरु नानक के यहां भी मिलती है। लेकिन मराठी में जिस तेवर के साथ आधुनिक काल में समाज सुधारकों ने आधुनिक सन्दर्भ में उस चेतना को आगे बढ़ाया था, वैसा हिन्दी में उस स्तर पर नहीं हो पाया। कुछ लोगों ने ऐसे प्रयास किए लेकिन वे परिघटना में

PRINCIPAL SHIVAJI COLLEGE Hingoli Dist. Hingoli

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
E-ISSN : 2348-7143
Impact Factor - (SJIF) – 6.625 (2019),
Special Issue -259 (B) 'वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएं, संस्कृति और साहित्य की पारस्पारिकता'
Jan. 2021
Peer Reviewed Journal

रुपान्तरित नहीं हो पाए। बल्कि कहना, चाहिए निर्गुण भक्तों की चेतना हिन्दी में लगभग खो गई थी, जिसे मराठी के प्रभाव स्वरूप हिंदी में दलित साहित्य के उभार के दौर में रेखांकित किया गया।

हिंदी काव्य परंपरा पर एक विहंगम दृष्टि डालने पर ज्ञात होता है कि, दलित साहित्य की परिकल्पना का नवीन्येस अभी हिंदी में अंकुरित होकर धीरे–धीरे विकास की ओर अग्रेसर हो रहा है। नामवर सिंह भी यह मानते हैं कि दलित के पक्ष में कोई दलित लेखक लिखे या दलितेतर लेखक कोई फर्क नहीं पड़ता। ''कोई लेखक दलित कुल में जन्म लेने से ही दलित चेतना का संवाहक नहीं हो जाता है। ....जन्मना दलित ही दलित चेतना का प्रतिनिधि होगा दूसरा कोई नहीं गलत है।[३]

हिंदी में दलित साहित्य का प्रारंभ भी मराठी के प्रभाव स्वरूप हुआ। सन १९८० में दया पवार को अपनी आत्मकथा 'बलूत' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया। 'अछूत' नाम से उनकी आत्मकथा का हिंदी में अनुवाद भी प्रकाशित हुआ। 'अछूत' के हिंदी प्रकाशन ने हिन्दी साहित्य में दलित चेतना की चिगांरी छोडी थी। पुन्नी सिंह ने 'वसुधा' पत्रिका के दलित साहित्य विशेषांक में क्षेत्र में दलित साहित्य के बारे में चर्चा गत सदी के नौवें दशक के प्रारंभ में शुरू हुई। मराठी दलित साहित्य के चर्चित कथाकार दया पवार को सन् १९८० के साहित्य अकादमी अवार्ड प्राप्त हुआ और उनकी आत्मकथा का 'बलूत' का हिन्दी अनुवाद 'अछूत' नाम से छपा तभी हिंदी लेखकों की उत्सुकता मराठी के दलित साहित्य ओर बढी। उसके बाद सन १९८१ में ग्वालियर में इस विषय पर एक सेमिनार का आयोजन हुआ था। उसके बाद ही में चर्चा होती रही लेकिन सन १९९० के बाद से विस्तृत होता गया। इसका मुख्य श्रेय राजेंद्र यादव और उनके संपादन में प्रकाशित 'हंस' पत्रिका को जाता है। अगस्त १९९२ में 'हंस' के तत्वावधान में दिल्ली में दलित साहित्य पर केन्द्रित गोष्ठी आयोजित की गई थी। इस गोष्ठी से स्पष्ट हो गया कि हिंदी में दलित साहित्य का प्रवेश शुरू हो गया है। जून १९९३ में मध्य प्रदेश प्रगतिशील लेखक संघ ने शिवपुरी में 'दलित कलम' नाम से दलित साहित्य पर केन्द्रित एक बृहद आयोजन किया। इसमें मराठी और हिंदी दोनों भाषाओं में दलितों की भागीदारी रही। इस संगोष्ठी में नामवर सिंह ने कहा था कि ''शिवपुरी में या दलित कलम रोपी जा रही है। हिंदी के लिए शीघ्र महावृक्ष हो जाएगी।'' इस प्रकार हिंदी में दलित साहित्य के बीजपवन में मराठी के दलित लेखकों और साहित्य का प्रभाव देखा जा सकता है।

हिंदी में इससे पहले कमलेश्वर के संपादन मे 'सारिका' के मई १९७५ के सामान्तर कहानी विशेषांक ने दलित चेतना से युक्त साहित्य का परिचय दिया। अपने संपादकिय में उन्होंने लिखा कि ''सोचने के लिये सवाल यह था लिया था कि मानव कल्याण की इतनी खूबसूरत पैरवी करने वाला देश इतने बड़े कल्याणकारी यातना शिविर में क्यों बदल गया है? भारतीय चिंतन और विचार धाराओं की मानव कल्याणकारी दृष्टि के विराट जलन के बावजूद या महादेश मानवीय मूल्यों की सत्ता पर बंजर क्यों हो गया है? क्या सिर्फ यह मान लिया जाए कि कुछ वर्गो ने इन विचार बीजों का रोपा नहीं जाने दिया है?''[३] स्पष्टत: इस बयान पर दलित पैंथर्स के विचारों पर का कोई असर दिखाई देता है। कमलेश्वर ने दलित साहित्य का पक्ष लेते हुए आगे लिखा था कि–''आज का समांतर और दलित साहित्य तमाम सौन्दर्यवादी मूल्यों की परवाह न करते हुए मनुष्य के औसत दु:ख–सुख, आकांक्षाओं की बात करता है।''[४] इस तरह महीप सिंह द्वारा संपादित 'संचेतना' पत्रिका दिसंबर १९८१ ने भी हिंदी में दलित साहित्य की जमीन तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हिंदी की इन दो महत्वपूर्ण पत्रिकाओं के दलित साहित्य पर जोर देने के पीछे भी मराठी में दलित पैंथर्स के प्रभाव स्वरूप उभर रहें दलित साहित्य चेतना का प्रभाव रहा।

हिंदी में मराठी की तरह दलित पैंथर्स जैसे किसी संगठन की अलग से स्थापना नहीं हुई, लेकिन हिंदी की साहित्यिक परिदृश्य मराठी के दलित पैंथर्स और इससे प्रभावित दलित साहित्य से प्रेरणा लेता रहा। मराठी

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.625 (2019),
Special Issue -259 (B) 'वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएं, संस्कृति और साहित्य की पारस्पारिकता'
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
Jan. 2021

की तर्ज पर हिंदी में भी दलित लेखकों के संगठन अवश्य बने। वर्तमान में भी दलित लेखक संघ, भारतीय दलित लेखक संघ, अखिल भारतीय दलित लेखक संघ, अम्बेडकरवादी लेखक संघ आदि में सक्रिय हैं।

हिंदी एवं मराठी साहित्यक परिदृश्य का अंतर्संबंध

दलित साहित्य अम्बेडकरवाद से प्रभावित प्रवृत्त साहित्य है। इस प्रभाव के कारण या अपनी परंपरा और पहचान को मराठी के दलित साहित्य से जोड़ता है। हिंदी में दलित साहित्य की निरंतरता में भी मराठी का प्रभाव दृष्टव्य है। हिंदी की दलित रचनाओं को देखने पर साफ पता चलता है कि वह मराठी कोई दया पवार, बाबूराव बागोल, नामदेव ढसाल, यशवंत मनोहर, शरण कुमार लिंबाले, लक्ष्मण गायकवाड, पल्हाद आदि की रचनाओं से सीधे–सीधे प्रभावित है। मराठी दलित साहित्य में आत्मकथा को बहुत महत्व दिया गया। हिंदी में भी यही हुआ। मराठी की तरह हिंदी में भी दलित लेखकों ने कहानी, कविता, उपन्यास आदि के साथ समय समय पर आलोचनात्मक लेखों और टिप्पणियों के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त किया है।

हिंदी दलित साहित्य के कई महत्वपूर्ण लेखकों के मराठी दलित आंदोलन और साहित्य के साथ संबंध रहे हैं। जिसका हिंदी साहित्य पर स्पष्टत: प्रभाव पड़ा। ओमप्रकाश बाल्मीकि, कौशल्या बैसंत्री, विमल थोरात, हेमलता महिश्वर आदि हिंदी के दलित रचनाकारों के व्यक्तित्व के निर्माण मराठी दलित परिदृश्य में हुआ।

अन्तत: कहा जा सकता है कि जिस साहित्य में विद्रोह, संघर्ष, क्रान्ति, की प्रेरणा, प्राचिन गलत रुढी–परम्पराओं का खंडन, स्वानुभूति की अभिव्यक्ति, जीवन की सच्चाई, मानव की प्रतिष्ठा, मानवियता तथा समतायुक्त सहजीवन है वह दलित साहित्य की संवेदना है। हिंदी में दलित चेतना का साहित्य देर से आया। हिंदी में दलित साहित्य का प्रारंभ भी मराठी के प्रभाव स्वरूप हुआ। मराठी में जिस तेवर के साथ आधुनिक काल में समाज सुधारकों ने आधुनिक सन्दर्भ में उस चेतना को आगे बढ़ाया था, वैसा हिन्दी में उस स्तर पर नहीं हो पाया। कुछ लोगों ने ऐसे प्रयास किए लेकिन वे परिघटना में रुपान्तरित नहीं हो पाए। इसलिए हिन्दी साहित्य में दलित चेतना मराठी से प्रभावित होकर हिन्दी में आई।

संदर्भ:–

१. लोखंडे अरुना, समकालीन हिन्दी कथा साहित्य में जन चेतना, विकास प्रकाशन, कानपुर. सं. १९९६ पृ. ३२
२. सं. सिंह नामवर, नयापथ, अंक–२६, १९९८ पृ. १२–१३
३. सं.कमलेश्वर, सारिका मई १९७५ संपादकिय पृ. ०५
४. वहीं

T.C.
Assistant Professor
Shivaji College,Hingoli.
Tq.& Dist.Hingoli.(MS.)